www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexp

WORLD खबर EXPRESS

गुरुवार, 16-09-2021

www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

WORLD खबर एक्सप्रेस

MID DAY E-PAPER

रोग की पहचान कर बचाएं धान की फसल

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह के निर्देश पर पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. यूके त्रिपाठी ने धान की फसल को रोग से बचाने के लिए जानकारी साझा की है। उन्होंने बताया कि इस मौसम में फसल में रोग एवं कीट के लगने की पूरी आशंका रहती है। इसलिए किसान रोग एवं कीट की पहचान कर उचित दवाओं का प्रयोग करें। डॉ. त्रिपाठी ने बताया कि धान में प्रमुख रूप से ब्लास्ट, जीवाणु झुलसा एवं धारीदार

जीवाणु झुलसा आदि रोग हैं। ब्लास्ट या झोंका रोग में धान की पत्तियां एवं डंठल दोनों प्रभावित होते हैं। इसमें पूरा पौधा गहरे रंग का होकर झुलस जाता है। ऐसे लक्षण दिखाई देने पर कार्बेडाजिम 50 प्रतिशत दवा एक किलोग्राम या 600 ग्राम ट्राईसाईक्लाजोल दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। झुलसा रोग के लगने से धब्बों का रंग पुआल जैसा हो जाता है। उचित नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइकिलइन तथा 500 ग्राम 50 प्रतिशत कॉपर ऑक्सिक्लोराइड 1000 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। उन्होंने बताया खेत में नमी या सूखे की स्थिति में हल्दिया रोग से बालियों के दाने पीले आभामंडल से घिरे रहते हैं। इसके उचित नियंत्रण के लिए बाली निकलने की अवस्था में प्रॉपिकॉनाजोले 1.5 ग्राम दवा 800 से 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • शुक्रवार • 17 सितम्बर • 2021

ड्रोन से 15 मिनट में एक एकड़ खेत में छिड़काव

कानपुर (एसएनबी)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र अनौगी के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. वीके कनौजिया के नेतृत्व में ड्रोन के द्वारा 2.5 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर छिड़काव का प्रदर्शन ग्राम पचपुखरा और कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में किया गया।

इस अवसर पर केंद्र के वैज्ञानिक डॉ पूनम सिंह व डॉ चन्द्र कला यादव वैज्ञानिक, गृह विज्ञान, डॉ खलील खान वैज्ञानिक मृदा विज्ञान, डॉ विनोद कुमार वैज्ञानिक सस्य वैज्ञानिक, अमरेंद्र यादव, वैज्ञानिक मौसम विज्ञान, जलालाबाद व तालग्राम के सीडीपीओ के अतिरिक्त लगभग 80 कृषक व कृषक महिलाओं ने तकनीकी प्रदर्शन का लाभ उठाया। ड्रोन का प्रदर्शन गरुणा एयरोस्पेस लिमिटेड, चेन्नई के पायलट आरएम हरीनिवास व कोम्पायलट एम सैयद नियासउद्दीन ने किया। डॉ.कनौजिया ने बताया कि गन्ना, मक्का, अरहर, सरसों, ज्वार, बाजरा जैसी बड़ी फसलों में जहां छिड़काव कर पाना काफी मुश्किल होता है, वहां हवा में ड्रोन के द्वारा छिड़काव किया जाना अत्यंत आसान तथा सस्ता तरीका है। ड्रोन से एक बार में 1 एकड़ क्षेत्रफल पर मात्र 5 लीटर पानी पर्याप्त होता है। यह कार्य मात्र 15 मिनट में संभव है और इस पर लगभग 400 रुपये प्रति एकड़ का खर्च आता है।

वही दूसरी ओर परंपरागत तरीके से छिड़काव करने पर प्रति एकड़ 200 लीटर पानी की आवश्यकता होती है और एक व्यक्ति को 5 से 6 घंटे छिड़काव करना पड़ता है। उन्होंने बताया कि जनपद में मुख्य रूप से आलू की फसल में झुलसा जैसी बीमारियां बहुत बड़ा नुकसान पहुंचाती है। जिनके नियंत्रण के लिये दवाओं का प्रयोग ड्रोन के द्वारा बड़े पैमाने पर कम समय में किया जा सकता है। ड्रोन का उपयोग सहभागिता अथवा किराए के आधार पर किया जाना संभव है क्योंकि इसकी कीमत काफी अधिक 5 से 6 लाख रुपये है। ड्रोन नव युवकों के लिए नए रोजगार पैदा कर सकता है।

उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:12 | अंक:252 | देहरादून, गुरुवार, 16 सितंबर, 2021 | पृष्ठ:08

धान फसल में कीट एवं रोगों की संभावना, कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों को किया सचेत

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ यूके त्रिपाठी ने बताया कि मौसम को देखते हुए धान की फसल में रोग एवं कीट के बढ़ने की प्रबल संभावनाएं है इसलिए किसान भाई रोग एवं कीट की अच्छी तरह पहचान कर उचित दवाओं का प्रयोग करें समय से बचाव न कर पाने की स्थिति में 35 से 40% तक किसान भाइयों को नुकसान हो सकता है डॉक्टर त्रिपाठी ने बताया कि धान में प्रमुख रूप से ब्लास्ट, जीवाणु झुलसा एवं धारीदार जीवाणु झुलसा आदि रोग है।

ब्लास्ट या झोंका रोग में धान की पत्तियां तथा डंठल दोनों प्रभावित होते हैं जिसे पूरा पौधा गहरे रंग का होकर झुलस जाता है ऐसे लक्षण दिखाई देने पर कार्बेंडाजिम 50% दवा 1 किलोग्राम अथवा 600 ग्राम ट्राईसाईक्लाजोल दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें झुलसा रोग के लगने से धब्बों का रंग पुआल जैसा हो जाता है उचित नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन तथा 500 ग्राम 50% कॉपर ऑक्सिक्लोराइड

1000 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें उन्होंने बताया खेत में नमी या सूखे की स्थिति में हल्दिया रोग से बालियों के दाने पीले आभामंडल से घिरे रहते है इसके उचित नियंत्रण के लिए बाली निकलने की अवस्था में प्रोपिकोनाजोल 1.5 ग्राम दवा 800 से 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें डॉ० त्रिपाठी ने किसान भाइयों को सचेत करते हुए बताया कि धान की इस अवस्था में गंधी कीट, तना छेदक एवं फुदका कीट प्रमुख है जिनके लगने पर पैदावार प्रभावित होती है गंधी कीट के उचित नियंत्रण के लिए फूल आने की अवस्था में मिथाइल पेराथियोन 2% धूल 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव करें तना छेदक के नियंत्रण के लिए कारटॉप हाइड्रोक्लोराइड 54%, 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 3.5 सेंटीमीटर धान के खेत में खड़े पानी में प्रयोग करें। फुदका कीट के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3जी, 20 किलो ग्राम या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 0.5 मिली लीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव कर किसान भाई अपने धान की फसल का बचाव कर सकते हैं।

FOLLOW US www.janmattoday.in facebook.com/janmattoday.in

लखनऊ, शुक्रवार, 17 सितम्बर, 2021, वर्ष - 12, अंक - 329, पृष्ठ - 12, मूल्य ₹ 3.00/

www.janexpresslive.com/epaper

जन एक्सप्रेस

धान की फसल में रोग एवं कीट के बढ़ने की संभावनाएं हुईं प्रबल

जन एक्सप्रेस संवाददाता

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के निर्देश क्रम में गुरुवार को पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. यू. के. त्रिपाठी ने बताया कि मौसम को देखते हुए धान की फसल में रोग एवं कीट के बढ़ने की प्रबल संभावनाएं हैं। इसलिए किसानो को रोग एवं कीट की अच्छी तरह पहचान कर उचित दवाओं का प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि धान में ब्लास्ट, जीवाणु झुलसा एवं धारीदार जीवाणु झुलसा आदि रोग होते हैं। जिसमें ब्लास्ट या झोंका रोग में धान की पत्तियां तथा डंठल दोनों प्रभावित होते हैं जिसे पूरा पौधा गहरे रंग का होकर झुलस जाता है। उन्होंने बताया कि ऐसे लक्षण दिखाई देने पर कार्बेडाजिम 50 प्रतिशत दवा 1 किलोग्राम अथवा 600 ग्राम ट्राईसाईक्लाजोल दवा 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

झुलसा रोग के लगने से धब्बों का रंग पुआल जैसा हो जाता है। उचित नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में 15 ग्राम स्ट्रैप्टोसाइकिलइन तथा 500 ग्राम 50 फीसदी कॉपर ऑक्सिक्लोराइड 1000 लीटर पानी में प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें। डॉ. त्रिपाठी ने किसानों को मौसम के हिसाब से सचेत करते हुए धान की फसल में लगने वाले कई रोगो जैसे झुलसा हल्दिया रोग आदि के बारे में बताते हुए उनके उपचार के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि धान में लगने वाले रोगों से पैदावार प्रभावित होती है। उन्होंने बताया कि गंधी कीट के उचित नियंत्रण के लिए फूल आने की अवस्था में मिथाइल पेराथियोन 2 प्रतिशत धूल 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव करें। तना छेदक के नियंत्रण के लिए कारटॉप हाइड्रोक्लोराइड 54 प्रतिशत 18 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 3.5 सेंटीमीटर धान के खेत में खड़े पानी में प्रयोग करें।

आज महानगर

कृषि वैज्ञानिक ने धान की एडवाइजरी जारी की

कानपुर,16 सितंबर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्यौगिकी विश्वविद्यालय के पादप रोग विज्ञान विभाग के प्रो. डॉ यूके सिंह ने बताया कि मौसम को देखते हुए धान की फसल में रोग एवं कीट के बढ़ने की संभावना उत्पन्न हो गयी है। एडवाइजरी जारी करते हुए डॉ यूके सिंह ने कहा कि किसान रोग व कीट की